भारतवर्ष :- जयशंकर प्रसाद

स्नातक,हिंदी प्रतिष्ठा,द्वितीय वर्ष,पेपर-३

डॉ०मनोज कुमार सिंह,सह-आचार्य,

हिंदी विभाग, राजा सिंह महाविद्यालय,

सिवान।

हिमालय के आँगन में उसे, प्रथम किरणों का

दे उपहार ।

उषा ने हँस अभिनंदन किया, और पहनाया

हीरक-हार ।।

जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक में फैला

फिर आलोक ।

व्योम-तुम पुँज हुआ तब नाश, अखिल संसृति हो उठी अशोक ।।

विमल वाणी ने वीणा ली, कमल कोमल कर में सप्रीत ।

सप्तस्वर सप्तसिंधु में उठे, छिड़ा तब मधुर साम-संगीत ।।

बचाकर बीच रूप से सृष्टि, नाव पर झेल प्रलय का शीत ।

अरुण-केतन लेकर निज हाथ, वरुण-पथ में हम बढ़े अभीत ।।

सुना है वह दधीचि का त्याग, हमारी जातीयता का विकास ।

पुरंदर ने पवि से है लिखा, अस्थि-युग का मेरा इतिहास ।।

सिंधु-सा विस्तृत और अथाह, एक निर्वासित का उत्साह ।

दे रही अभी दिखाई भग्न, मग्न रत्नाकर में वह राह ।।

धर्म का ले लेकर जो नाम, हुआ करती बलि कर दी बंद ।

हमीं ने दिया शांति-संदेश, सुखी होते देकर आनंद ।।

विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम ।
भिक्षु होकर रहते सम्राट, दया दिखलाते घर-घर घूम ।

यवन को दिया दया का दान, चीन को मिली धर्म की दृष्टि ।
मिला था स्वर्ण-भूमि को रत्न, शील की सिंहल को भी सृष्टि ।।

किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यहीं ।

हमारी जन्मभूमि थी यहीं, कहीं से हम आए थे नहीं ।।

जातियों का उत्थान-पतन, आँधियाँ, झड़ी, प्रचंड समीर ।

खड़े देखा, झेला हँसते, प्रलय में पले हुए हम वीर ।।

चरित थे पूत, भुजा में शक्ति, नम्रता रही सदा संपन्न ।

हृदय के गौरव में था गर्व, किसी को देख न सके विपन्न ।।

हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव ।

वचन में सत्य, हृदय में तेज, प्रतिज्ञा मे रहती थी टेव ।।

वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान ।

वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य-संतान ।।

जियें तो सदा इसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष ।

निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष ।।

भावार्थ :- जयशंकर प्रसाद मूलत: छायावादी कवि हैं। छायावादी काव्य में प्रकृति-प्रेम और सौन्दर्य के प्रति अपार स्नेह के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठा और राष्ट्र-प्रेम की भावना भी अभिव्यक्त हुई है। प्रसाद ने अपने साहित्य के माध्यम से भारत के गौरवपूर्ण इतिहास को प्रस्तुत किया है।

"भारत वर्ष " गीत जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित "स्कन्दगुप्त" नाटक में देवसेना द्वारा गाया गया है। कवि भारतवर्ष की महिमा की प्रसंशा करते हुए कहते हैं कि सूर्य की पहली किरण भारतभूमि पर ही पड़ती है। यह ऐसा प्रतीत होता है कि सूर्य अपनी किरणों की भेंट भारतभूमि को देता है। सूर्य की किरणें

जब हिमालय पर पड़ती है तब ओस की बूँदें हीरे के कणों की भाँति चमकने लगती है अर्थात् उषा हँसकर भारत का स्वागत करती है और उसे हीरों का हार पहनाती है। कवि कहना चाहते हैं कि भारत में ही सर्वप्रथम ज्ञान रूपी सूर्य का उदय हुआ, वेद-पुराण की रचना हुई जिसके बाद हम सम्पूर्ण विश्व में ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने लगे। इस प्रकार अज्ञानता का अंधकार नष्ट हो गया और सम्पूर्ण विश्व शोकरहित हो गई।

"जगे हम लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक।

व्योम-तम-पुंज हुआ नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक॥"

कवि ने कई पौराणिक पात्रों द्वारा भी भारत की विशेषताओं का उल्लेख किया है। कवि कहते हैं कि माता सरस्वती ने अपने कोमल हाथों में वीणा धारण की और संगीत छेड़ा जिससे सामवेद की ऋचाएँ सात नदियों (सिन्धु, रावी, सतलुज, झेलम, सरस्वती, चेनाब तथा व्यास) से घिरे आर्यावर्त में गूँज उठीं। आदिपुरुष मनु ने प्रलय के बाद सृष्टि को बीज रूप में सहेज कर खत्म होने से बचाया। महर्षि दधीचि ने राक्षस वृत्रासुर के संहार के लिए तथा मानव-जाति की रक्षा के लिए अपनी अस्थियों का सहर्ष दान कर दिया। दधीचि की हड्डियों से ही देवराज इन्द्र ने वज्रास्त्र बनाया जिससे वृत्रासुर का संहार संभव हुआ। इस देश में मर्यादा-पुरुषोत्तम राम जैसे महानायक का जन्म हुआ जिसने वनवास

जीवन से हार नहीं मानी, तमाम कठिनाइयों, मुश्किलों, अड़चनों आदि का सामना किया तथा वानरों की सहायता से समुद्र पर सेतु का निर्माण किया, लंका पर चढ़ाई की और अत्याचारी रावण का वध कर अपने परम-कर्त्तव्य का पालन किया।

भारत वैदिक काल से ही दया, उदारता तथा परोपकार की भूमि रही है। वैदिक काल में कर्मकांड के नाम पर पशुओं की बलि दी जाती थी। गौतम बुद्ध ने दया और परोपकार पर आधारित बौद्ध धर्म की स्थापना की और बलि-प्रथा का निषेध किया।

"धर्म का ले-लेकर जो नाम हुआ करती बलि, कर दी बंद।

हमीं ने दिया शांति संदेश,सुख होते देकर आनंद ॥

भारतवासियों ने ही सर्वप्रथम संसार को शांति का संदेश दिया। कलिंग के महा-युद्ध के उपरांत सम्राट अशोक ने हिंसा का त्याग किया और बौद्ध धर्म स्वीकार कर अनेक देशों में बौद्ध धर्म का प्रचार किया। उन्होंने अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को बौद्ध भिक्षु बनाकर श्रीलंका भेजा।

भारतवर्ष ही वह भूमि है जहाँ चंद्रगुप्त ने यूनानी विजेता सेल्यूकस को पराजित कर दया का परिचय देते हुए क्षमादान दिया। सम्राट

अशोक के भेजे गर बौद्ध-भिक्षुओं ने चीन में बौद्ध धर्म का प्रचार किया। बौद्ध भिक्षुओं ने बर्मा के लोगों को बौद्ध-धर्म के तीन रत्नों - बुद्ध, संघ और धर्म का ज्ञान कराया। सिंहल को पंचशील (सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, मादक पदार्थों का त्याग और अस्तेय।) के अंगों की शिक्षा दी।

"यवन को दिया दया का दान, चीन को मिली धर्म की दृष्टि।

मिला था स्वर्ण-भूमि को रत्न, शील की सिंहल को भी दृष्टि॥

कवि भारतभूमि की विशेषताओं का वर्णन करते हुए कहते हैं कि हम भारतीयों ने किसी से कभी भी कुछ नहीं छीना बल्कि हमने शरणार्थियों को शरण दी। हम भारतवासी सदा विनम्र व चरित्रवान रहे हैं। हमारे दिलों में सभी के लिए करुणा है, हम किसी को कष्ट में नहीं देख सकते हैं। अतिथि सदैव हमारे लिए देवतुल्य रहे हैं। हमारे शरीर में दिव्य-आर्यों का रक्त संचार कर रहा है।

वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान।

वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य संतान॥

अत: हम कह सकते हैं कि जयशंकर प्रसाद ने " भारत वर्ष " कविता द्वारा भारत की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति और ज्ञान का गुणगान करते हुए आज की पीढ़ी में उदारता, शांतिप्रियता, निर्भीकता तथा जोश, उमंग, साहस और कर्त्तव्यपरायणता का भाव भरने की सफल कोशिश की है।